International Journal of Sanskrit Research 2024; 10(1): 164-167

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2024; 10(1): 164-167
© 2024 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 09-12-2023
Accepted: 12-01-2024

डॉ. मीरा शर्मा
असिस्टेन्ट प्रोफेसर
दिल्ली विश्वविद्यालय,
दिल्ली, भारत

Corresponding Author:
डॉ. मीरा शर्मा
असिस्टेन्ट प्रोफेसर
दिल्ली विश्वविद्यालय,
दिल्ली, भारत

कालिदास–साहित्य में नारी का आत्मिक सौन्दर्य

डॉ. मीरा शर्मा

प्रस्तावना

संस्कृत साहित्य को मुख्यतः दो वर्गों में विभक्त किया जाता है– वैदिक साहित्य एवं लौकिक साहित्य। वैदिक साहित्य के अंतर्गत वेद, ब्राह्मण ग्रन्थ, आरण्यक एवं उपनिषद् आदि ग्रन्थ आते हैं, जबकि लौकिक साहित्य के अंतर्गत रामायण, महाभारत, पुराणादि ग्रन्थ आते हैं। लौकिक साहित्य में आगे चलकर भास, कालिदास, भारवि, बाणभट्ट, हर्षवर्धन आदि महान् कवि हुये हैं जिन्होंने संस्कृत साहित्य को पल्लवित और पुष्पित किया । इनमें भी महाकवि कालिदास का संस्कृत साहित्य के विकास में अपना अद्वितीय योगदान है। महाकवि कालिदास की कृतियों में एक अद्भुत सौन्दर्य है, चाहे वह शब्द की दृष्टि से हो, अर्थ की दृष्टि से हो, रस की दृष्टि से हो या भाव की दृष्टि से। कालिदास–साहित्य में मानव–जीवन सम्बन्धी अनेक महत्त्वपूर्ण विषयों का अत्यन्त सौन्दर्यमय दृष्टि से वर्णन किया गया है, या यूँ कहें कि मानव–जीवन का कोई भी पक्ष कालिदास–साहित्य से अछूता नहीं है। कालिदास ने अपने साहित्य में नारी–सौन्दर्य को अनेक उद्धरणों के माध्यम से प्रकट किया है। यहाँ नारी–सौन्दर्य से अभिप्राय केवल उसकी शारीरिक सुन्दरता से नहीं है, अपितु उसकी आत्मिक सुन्दरता से भी है। यदि हम कालिदास के 'कुमारसम्भवम्' नामक ग्रन्थ की बात करें, तो वहाँ कालिदास ने पार्वती के चरित्र के माध्यम से नारी के आत्मिक सौन्दर्य का पक्ष, यथा– बुद्धिमत्ता, दृढसंकल्प, तेजस्विता आदि को भी उजागर किया है। अतः मेरे द्वारा इस विषय को अधिकृत करके प्रस्तुत किए जाने वाले शोध–पत्र का विषय है–"कालिदास–साहित्य में पार्वती का आत्मिक सौन्दर्य।" कालिदास–साहित्य के ऊपर हुए अध्ययनों से पता चलता है कि कालिदास सार्वकालिक एवं सार्वभौमिक कवि हैं जिनके साहित्य की प्रासंगिकता प्रत्येक काल में विद्यमान है।

संस्कृत साहित्य हो या विश्व का कोई भी साहित्य, जहाँ कालिदास की चर्चा होती न हो अर्थात् देश–विदेश सर्वत्र महाकवि कालिदास की प्रसिद्धि व्याप्त है। कालिदास द्वारा रचित साहित्य को 'कालिदास साहित्य' कहा जाता है। कालिदास ने महाकाव्यों (रघुवंशम्, कुमारसम्भवम्,) नाटकों (अभिज्ञान–शाकुन्तलम्, विक्रमोर्वशीयम्, मालविकाग्निमित्रम्) एवं गीतिकाव्यों (मेघदूतम्, ऋतुसंहारम्) की रचना की है। उनकी हर कृति में एक अद्भुत सौन्दर्य है जो रस, अलंकार, पात्रों के चरित्र–चित्रण, प्रकृति–चित्रण आदि से सम्बन्धित होता है। इसके अतिरिक्त उनकी कृतियाँ सार्वकालिक और सार्वभौमिक शिक्षा से भी युक्त होती हैं जिनमें सामाजिक कल्याण की भावना निहित रहती है।

कालिदास की अद्वितीय काव्य प्रतिभा के कारण ही इनको 'कविकुलगुरू कालिदास' कहा गया है—"कविकुलगुरूः कालिदासो विलासः।"

(जयदेव) बाणभट्ट ने कालिदास के काव्य को रस से युक्त मञ्जरी (पुष्पों) के समान कहा है-"

निर्गतासु न वा कस्य कालिदासस्य सूक्तिषु। प्रीतिर्मधुरसार्द्रासु मञ्जरीष्विव जायते।"(बाणभट्ट) सर विलियम जोन्स, जिन्होंने सर्वप्रथम 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' का अंग्रेजी भाषा में अनुवाद किया था, उन्होंने भी कालिदास को–"the Indian Shakespeare" इस प्रकार कहकर संबोधित किया है। प्रोफेसर लासेन ने उनके विषय में "the brightest star in the firmament of Indian Poetry" इस प्रकार कहा है। कालिदास ने अपनी सभी कृतियों में नारी पात्रों को केन्द्र में रखा है। उनकी अनेक कृतियों के नाम नायिकाओं के नाम पर आधारित हैं, यथा– 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्', 'मालविकाग्निमित्रम्', 'विक्रमोर्वशीयम्' आदि। कालिदास ने अपनी कृतियों में जहाँ एक ओर नारी के भौतिक–सौन्दर्य को अत्यन्त मनोहारी ढंग से प्रस्तुत किया है, वहीं दूसरी ओर उन्होंने 'कुमारसम्भवम्' नामक महाकाव्य में शिव को वर के रूप में प्राप्त करने के लिए तपस्या करती हुई पार्वती के आत्मिक सौन्दर्य को जिस कुशलता से प्रस्तुत किया है, वह अद्वितीय है। 'कुमारसम्भवम्' में पार्वती के आत्मिक सौन्दर्य को प्रकाशित करते हुए कालिदास कहते हैं—

- दृढ़–संकल्प से युक्त—— 'कुमारसम्भवम्' में एक प्रसंग आता है कि कामदेव के द्वारा प्रयत्न किये जाने पर भी जब शिव के मन में पार्वती के प्रति प्रेम उत्पन्न नहीं हो पाया, तब पार्वती ने अपने तपोबल पर शिव को वर के रूप में प्राप्त करने का दृढ़संकल्प लिया। यद्यपि पार्वती की माता मेना उसे समझाती हुई कहती है कि उसका कोमल शरीर कठोर तप के योग्य नहीं है; किन्तु फिर भी वह अपने अटल निश्चय से डिगती नहीं है। मेना कहती है कि हे पुत्री, तुम अपने कोमल शरीर से इस कठोर तप को उसी प्रकार सहन नहीं कर पाओगी, जिस प्रकार शिरीष का कोमल फूल पक्षी के पादाघात को सहन नहीं कर पाता—"पदं सहेत भ्रमरस्य पेलवं, शिरीषपुष्पं न पुनः पतत्रिणः।"–कुमारसम्भवम्, 5.4
- इस प्रकार उपदेश देने वाली मेना स्थिर और प्रबल इच्छा वाली अपनी पुत्री को उसके निश्चय से हटा नहीं सकी। कालिदास यहाँ पार्वती के दृढ़निश्चय को एक सुन्दर दृष्टान्त के माध्यम से बतलाते हुए कहते हैं कि चाही हुई वस्तु के लिए दृढ़निश्चय वाले मन को और नीचे की ओर जाते हुये जल को कोई नहीं रोक सकता।[1]
- तपस्विनी—कालिदास बतलाते हैं कि त्रिकाल स्नान करने वाली, अग्निहोत्र करने वाली, पेड़ की छाल को धारण करने वाली, वेद को पढ़ने वाली सन्यासिनी, तपस्विनी, ऋषिरूपा वह पार्वती भगवान् शिव को वर के रूप में प्राप्त करने के लिए तप में इतना आगे बढ़ चुकी थी कि बड़े– बड़े ऋषि–मुनि भी उसका दर्शन करने के लिए आते थे। यही कारण है कि कहा गया है कि धर्म में बढ़े हुए व्यक्ति की आयु नहीं देखी जाती।[2]
- सहनशीला—कालिदास पार्वती के आत्मिक सौन्दर्य पर प्रकाश डालते हुए बतलाते हैं कि पार्वती के अत्यन्त कोमल होने पर भी उसमें कठोर तप करने की क्षमता का होना, उसकी सहनशीलता को द्योतित करता है। वे कहते हैं कि पार्वती का शरीर स्वर्ण के कमल से बना हुआ है; जहाँ एक ओर उसका स्वभाव कमल के समान कोमल है, वही दूसरी ओर वह स्वर्ण के समान कठोर तथा शक्ति से युक्त भी है अर्थात् उसमें कमल और स्वर्ण दोनों की विशेषतायें विद्यमान हैं– "ध्रुवं वपुः काञ्चनपद्मनिर्मितं, मृदु प्रकृत्या च ससारमेव च॥"– कुमारसम्भवम्, 5.19 कहने का भाव यह है कि वह सुख–दुःख सभी द्वन्द्वों को सहन करने में समर्थ है।
- धै र्य से युक्त— कुमारसम्भवम्" में अपने मनचाहे वर को प्राप्त करने के लिए तपस्या करती हुई पार्वती को जब अपने इष्ट की प्राप्ति नहीं होती तो वह अधीर नहीं होती, अपितु दुगुने उत्साह के साथ, अपने शरीर की कोमलता का विचार न करते हुए और अधिक कठोर तप करना प्रारम्भ कर देती है। इससे उसके धैर्य से युक्त स्वभाव का ज्ञान होता है—

  "यदा फलं पूर्वतपःसमाधिना न तावता लभ्यममंस्त काङ्क्षितम्। तदानपेक्ष्य स्वशरीरमार्दवं तपो महत्सा चरितुं प्रचक्रमे॥– कुमारसम्भवम्, 5.18
- आत्मनिर्भर—'कुमारसम्भवम्' में वर्णन आता है कि यद्यपि पार्वती अपने पितृ–गृह में अत्यन्त सुख–सुविधाओं के साथ रही; किन्तु जब व ह वन में तपस्या करने आती है, तब वहाँ किसी पर बिना आश्रित हुए ही, साधनों के अभाव में कठोर तप करना प्रारम्भ कर देती है। कालिदास बतलाते हैं कि जीवन–निर्वाह के योग्य वस्तुओं के अभाव में पार्वती लता के समान अपनी भुजा का तकिया लगाकर नंगी भूमि पर ही

[1] क ईप्सितार्थस्थिरनिश्चयं मनः, पयश्च निम्नाभिमुखं प्रतीपयेत्॥– कुमारसम्भवम्, 5.5

[2] न धर्मवृद्धेषु वयः समीक्ष्यते॥– कुमारसम्भवम्, 5.16

सोती है।[3] इससे उसकी आत्म–निर्भरता का ज्ञान होता है।

- संस्कारयुक्ता— यद्यपि पार्वती शिव को वर के रूप में प्राप्त करने के लिए दृढ़संकल्प से युक्त थी, किन्तु फिर भी वह तप करने के लिए जाने से पूर्व, अपनी एक सखी के माध्यम से अपने पिता से फलप्राप्तिपर्यन्त तप करने के लिए वन में रहने की आज्ञा मांगती है— "कदाचिदासन्नसखीमुखेन सा मनोरथज्ञं पितरं मनस्विनी॥"– कुमारसम्भवम्, 5.6 तत्पश्चात् अपने पिता से आज्ञा लेने के बाद ही वह मोरों से युक्त हिमालय की उस चोटी पर तपस्या करने के लिए जाती है, जो कि बाद में संसार में उसी के नाम से ही प्रसिद्ध हुई।[4]
- त्यागशीला– कालिदास बतलाते हैं कि जिस पार्वती ने अत्यन्त सुख–सुविधाओं तथा ऐश्वर्य के साथ अपना जीवन व्यतीत किया हो, जिसने कभी भी दुःख का मुख न देखा हो, वन में आकर उस पार्वती को अपनी सभी सुख सुविधाओं का त्याग करना पड़ा। कालिदास कहते हैं कि तप के नियमों का पालन करते हुए उसको अपने स्वभाव अर्थात् हाव–भाव को पतली लताओं के पास तथा चञ्चल दृष्टि को हरिणियों के पास धरोहर के रूप में रखकर, उनका भी त्याग करना पड़ा—

"पुनर्ग्रहीतुं नियमस्थया तया द्वयेऽपि निक्षेप इवार्पितं द्वयम्। लतासु तन्वीषु विलासचेष्टितं विलोलदृष्टं हरिणाङ्गनासु च॥"– कुमारसम्भवम्, 5.13

यहाँ तक कि महलों में रहने वाली पार्वती इस समय बिना मकान के, आंधी–तूफान तथा वर्षा में खुले में रह रही है तथा अत्यन्त कोमल गद्दों पर सोने वाली, वह इस समय पत्थर की चट्टान पर सो रही है। पार्वती के इस त्याग के साक्षी सम्पूर्ण प्रकृति अर्थात् सूर्य, चन्द्रमा, दिन, रात आदि सभी हैं।[5]

- प्रकृति–प्रेम—कालिदास पार्वती का प्रकृति–प्रेम बतलाते हुए कहते हैं कि वह पार्वती प्रमाद से रहित होकर उसी प्रकार छोटे–२ वृक्षों को घडों के जल से सिंचती थी, जैसे कोई माता अपने स्तनों से अपने पुत्र को पोषित करती है। कहने का भाव है कि उन वृक्षों के प्रति पार्वती का वात्सल्य भाव था।

"अतन्द्रिता सा स्वयमेव वृक्षकान् घटस्तनप्रस्रवणैर्व्यवर्धयत्। गुहोऽपि येषां प्रथमाप्तजन्मनां न पुत्रवात्सल्यमपाकरिष्यति॥"– कुमारसम्भवम्, 5.14

इसके अतिरिक्त वह प्रतिदिन हरिणों को खाने के लिए जंगली अन्न दिया करती थी जिस कारण वे उस पर इतना विश्वास करते थे कि वह विनोदमात्र में सखियों की भाँति उनकी आँखों से अपनी आंखें मापा करती थी।[6]

- दयावती— 'कुमारसम्भवम्' में एक प्रसंग आता है कि तपस्या करती हुई वह पार्वती यद्यपि स्वयं पौष मास की रात्रियों में पानी में खड़ी हुई है, किन्तु अपनी स्थिति की परवाह न करते हुए, विरहावस्था में एक–दूसरे के लिए चिल्लाते हुए चकवा–चकवी के जोड़े को देखकर दया का अनुभव करती है। कहने का अभिप्राय है कि यद्यपि वह स्वयं दीन अवस्था में है किन्तु अपने कष्ट पर ध्यान न देती हुई उस जोड़े के प्रति दयाभाव और करुणा से युक्त है।[7] उपर्युक्त गुणों के अतिरिक्त मिताक्षर होना, स्वाभिमान होना, अतिथि–सत्कार में निपुणता, धार्मिकता, सत्यनिष्ठता, आत्मविश्वास आदि चारित्रिक विशेषतायें भी पार्वती के आत्मिक सौन्दर्य पर प्रकाश डालती हैं।

इस प्रकार कठोर तप वाली और सततप्रयासरत पार्वती ने अपने लक्ष्य अर्थात् शिव को वर के रूप में अंततोगत्वा प्राप्त कर ही लिया। एक ओर जहाँ कामदेव अर्थात् भौतिक सौन्दर्य शिव के मन को नहीं जीत पाया तथा भस्म हो गया, वही पार्वती के आत्मिक सौन्दर्य–तपस्या, दृढ़निश्चय, त्यागभाव, धीरता आदि संस्कारों के द्वारा अपने अभीष्ट लक्ष्य अर्थात् शिव जैसे महादेव को प्राप्त कर लिया। कालिदास द्वारा 'कुमारसम्भवम्' नामक महाकाव्य में किये गये पार्वती के इस सौन्दर्य वर्णन में, आत्मिक सौन्दर्य भौतिक सौन्दर्य की अपेक्षा अधिक प्रभावी रहा। भौतिक सौन्दर्य की एक सीमा होती है, जो युवावस्था के बाद ढल जाता है किन्तु आत्मिक सौन्दर्य सदा एक ही रूप में बना रहता है। वस्तुतः शिव–पार्वती के इस प्रणय–विवाह प्रसंग के माध्यम से कवि यह भी बताना चाहते हैं कि भौतिक

---

[3] अशेत सा बाहुलतोपधायिनी, निषेदुषी स्थण्डिल एव केवलम्।– कुमारसम्भवम्, 5.12

[4] प्रजासु पश्चात्प्रथितं तदाख्यया, जगाम गौरी शिखरं शिखण्डिमत्॥– कुमारसम्भवम्, 5.7

[5] शिलाशयां तामनिकेतवासिनीं निरन्तरास्वन्तरवातवृष्टिषु।
व्यलोकयन्नुन्मिषितैस्तडिन्मयैर्महातपःसाक्ष्य इव स्थिताः क्षपाः॥– कुमारसम्भवम्, 5.25

[6] अरण्यबीजाञ्जलिदानलालितास्तथा च तस्यां हरिणा विशश्वसुः।
यथा तदीयैर्नयनैः कुतूहलात् पुरः सखीनाममिमीत लोचने॥– कुमारसम्भवम्, 5.15

[7] परस्पराक्रन्दिनी चक्रवाकयोः पुरो वियुक्ते मिथुने कृपावती।– कुमारसम्भवम्, 5.26

सौन्दर्य पर आधारित कोई भी सम्बन्ध चिरकालिक नहीं होता जबकि आत्मिक सौन्दर्य पर आधारित सम्बन्ध चिरकालिक होता है। इस प्रकार कालिदास ने 'कुमारसम्भवम्' में पार्वती के आत्मिक सौन्दर्य का वर्णन कर अपने साहित्य को सौन्दर्य–तत्त्व से युक्त तथा समृद्ध बना दिया। वस्तुतः कालिदास सार्वकालिक एवं सार्वभौमिक कवि हैं जिनके साहित्य की प्रासंगिकता प्रत्येक काल में उपादेय है।

संदर्भ–ग्रंथ–सूची

1. आप्टे, वामन शिवराम: संस्कृत–हिन्दी कोश, रचना प्रकाशन, जयपुर, 2006.
2. Monier Williams M. An English and Sanskrit Dictionary, Fourth Indian Edition, Motilal Banarsidass, Delhi; c1976.
3. कुमारसम्भवम् (पञ्चमः सर्गः), डॉ० कुन्दन कुमार, सारस्वतम् पब्लिकेशन, पटना बिहार, 2021
4. Kalidasa's Kumarsambhava, Canto V, Mahendra Pratap Shastri, Allahabad, Ram Narain lal; c1941.
5. कुमारसम्भवमहाकाव्यम् (पञ्चमः सर्गः), डॉ० कुमरपाल सिंह, युवराज पब्लिकेशन्स, आगरा, 2021